नई तकनीक व महिलायें

आज हर आदमी अपने को आधुनिक व सभ्य दिखाने की कोशिश में रहता है। इसके लिये वह अपनी क्षमता के अनुसार सभी आधुनिक वस्तुएं लेने की कोशिश करता है। यह समाज में खुद को सभ्य व आधुनिक दिखाने का माध्यम होता है साथ ही समाज में रुतबा भी बढ जाता है। विज्ञान व नई-नई तकनीक ने मानव जीवन को सरल बनाया है।

लेकिन नये दौर की तकनीक मनुष्य के जीवन को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित कर रही है। हम तकनीक के ऐसे प्रयोग की बात कर रहे हैं जिसका इस्तेमाल कर महिलाओं व छोटे बच्चों की जिन्दगी को बुरी से बुरी परिस्थितियों में धकेला जा रहा है। यह नई तकनीक से बनी वे मशीनें हैं जिसका इस्तेमाल का लाखों बेटियों को हर साल जन्म लेने से रोक दिया जाता है और जो बेटियां इसके बाद भी जन्म लेती हैं, उन्हें यौन हिंसा व उत्पीड़न का रोज-ब-रोज शिकार होना पड़ता है। महिलाओं के खिलाफ? हिंसा व उत्पीड़न की घटनाओं में विज्ञान व नई-नई तकनीकों का इस्तेमाल लगातार बढ रहा है। इस नई तकनीक में मोबाइल फ़ोन से लेकर इंटरनेट तक सब शामिल है। महिलाओं के उत्पीड़न व यौन उत्पीड़न के पुराने तौर-तरीकों के साथ-साथ रोज नये-नये रूप सामने आ रहे हैं। यह इस हद तक है कि चिकित्सा जैसा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। गर्भवती महिलाओं के गर्भ में पल रहे भ्रूण के स्वास्थ्य व अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की जांच के लिये इस्तेमाल में लाये जाने वाली अल्ट्रासाउण्ड मशीन का इस्तेमाल मां के गर्भ में पल रहे भ्रूण की लिंगीय जांच कर कन्या भ्रूणों की पहचान कर उन्हें नष्ट करने के लिये किया जा रहा है। जिसके कारण हर साल लाखों बेटियों को जन्म लेने के प्राकृतिक अधिकार से वंचित कर उन्हें खत्म किया जा रहा है जिसके कारण महिला-पुरुषों का अनुपात लगातार बिगड़ता जा रहा है। इसी नई तकनीक का एक अन्य उत्पाद है हिडन (छुपा हुआ) कैमरा। बहुत छोटा होने के कारण इस हिडन कैमरे को किसी भी जगह आसानी से छुपाया जा सकता है। जिसका इस्तेमाल अपराधियों को पकड़ने के लिए किया जाना था उसका इस्तेमाल महिलाओं के उत्पीड़न के लिये बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। महिलाओं को अपमानित करने के लिए इन हिडन कैमरों का इस्तेमाल बढ रहा है। ये कैमरे इतने छोटे हैं कि इन्हें किसी पैन तक में छिपाया जा सकता है। लड़कियों के हॉस्टल के कमरों, चेंजिंग रूम व सार्वजनिक महिला शौचालयों तक में अक्सर ही इनके लगे होने की खबरें आती हैं। इसका इस्तेमाल महिलाओं व लड़कियों को अपमानित करने, बदला लेने के लिये तथा कम समय में किसी भी तरीके से ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने के लिये किया जाता है। हाल ही में एक मामला सामने आया कि एक दम्पत्ति के बेड रूम में पड़ोसी ने हिडन कैमरा लगाया हुआ था, जिसके बारे में उस दम्पत्ति को कोई जानकारी नहीं थी।

महिलाओं के साथ यौन हिंसा व उत्तपीड़न की घटनाओं को कुंठित मानसिकता के पुरुषों द्वारा कैमरे में कैद कर लिया जाता है ताकि वे इसके द्वारा अपनी ताकत का प्रदर्शन कर महिलाओं को अपमानित कर सकें।बदला लेने व महिला साथी को अपमानित करने के लिये महिला मित्र के साथ अपने निजी व अंतरंग फ़ोटो को बिना महिला साथी को बताये या पूछे इन्टरनेट व यू-ट्यूब पर अपलोड कर नई तकनीक के द्वारा महिला को उत्पीड़न किया जाना भी महिलाओं का यौन उत्पीड़न है। इन सहमति के साथ ली गई तस्वीरों का इस्तेमाल दोस्तों, समाज व परिवार में महिला को चरित्रहीन व नीचा दिखाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा लड़कियों को झूठे प्रेम में फ़सा कर व शादी के झूठे वादे पर महिलाओं के साथ बिताये अंतरंग पलों को चोरी से कमरे में कैद कर उनका फ़ायदा उठाने के लिए भी इस नई तकनीक से बने हिडन कैमरों का इस्तेमाल किया जाता है। अपने मुनाफ़े के लिए इन वीडियो को पोर्न साइटों पर डाल कर छोटे-छोटे बच्चों की पहुंच में लाया जा रहा है। पोर्न साइटों के कारोबार का एक हिस्सा इन हिडन कैमरों के माध्यम से चल रहा है जिसके द्वारा महिलाओं के शरीर का इस्तेमाल पैसा कमाने के लिये माल के रूप में किया जा रहा है।

इनका इस्तेमाल पुरुष अपनी कुंठा व कुत्सित भावनाओं के प्रभाव में करते हैं। इनका इस्तेमाल महिलाओं को नियंत्रित करने के एक माध्यम के रूप में भी किया जाता है। यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी महिला को सबक सिखाने के लिए उसके साथ बलात्कार करना। इन बनायी गई वीडियो का इस्तेमाल महिलाओं व प्रेमी जोड़ों को ब्लैक मेल करने के लिये भी किया जाता है। मोबाइल फ़ोन के द्वारा महिलाओं पर नज़र भी रखी जाती है।

प्रचार माध्यमों के द्वारा महिलाओं का चित्रण एक व्यक्ति के रूप में स्थापित करने के स्थान पर मात्र एक उपभोग वस्तु के रूप में स्थापित किया जा रहा है। पतित पूंजीवाद व साम्राज्यवाद के इस दौर में कितनी भी बड़ी-बड़ी खोजें कर ली जायें लेकिन इसमें एक बात हमेशा शामिल रहेगी कि इन खोज़ों व आविष्कारों का इस्तेमाल पूंजीपतियों का मुनाफ़ा बढ़ाने में ही काम आयेगा। यदि इससे बचना है तो नि:संदेह इस व्यवस्था के खात्मे की ओर क्रान्तिकारी कदम बढ़ाने होंगे। तभी और केवल तभी विज्ञान व नई तकनीक पूरी मानव जाति की सेवा कर सकेगी।

-साइबर नजर

अंधविश्वास से उपजा भगवान

1977 की बात है। मद्रास हाईकोर्ट में एक याचिका आई जिसमें कहा गया था कि तमिलनाडु में पेरियार की मूर्तियों के नीचे जो बातें लिखी हुई हैं, वे आपत्तिजनक हैं और लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती हैं इसलिए उन्हें हटाया जाना चाहिए। याचिका को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि ईरोड वेंकट रामास्वामी पेरियार जो कहते थे, उस पर विश्वास रखते थे इसलिए उनके शब्दों को उनकी मूर्तियों के पैडेस्टल पर लिखवाना गलत नहीं है। *पेरियार की मूर्तियों के नीचे लिखा था- ईश्वर नहीं है और ईश्वर बिलकुल नहीं है।

जिस ने ईश्वर को रचा वह बेवकूफ है, जो ईश्वर का प्रचार करता है वह दुष्ट है और जो ईश्वर की पूजा करता है वह बर्बर है।

पेरियार नायकर के ईश्वर से सवाल :-

1. क्या तुम कायर हो जो हमेशा छिपे रहते हो, कभी किसी के सामने नहीं आते?

2. क्या तुम खुशामद परस्त हो जो लोगों से दिन रात पूजा, अर्चना करवाते हो?

3.क्या तुम हमेशा भूखे रहते हो जो लोगों से मिठाई, दूध, घी आदि लेते रहते हो?

4. क्या तुम मांसाहारी हो जो लोगों से निर्बल पशुओं की बलि मांगते हो?

5. क्या तुम सोने के व्यापारी हो जो

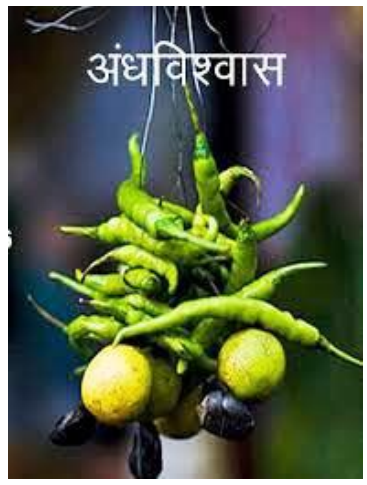

मंदिरों में लाखों टन सोना दबाये बैठे हो?

6. क्या तुम व्यभिचारी हो जो मंदिरों में देव दासियां रखते हो ?

7. क्या तुम कमजोर हो जो हर रोज होने वाले बलात्कारों को नही रोक पाते?

8. क्या तुम मूर्ख हो जो विश्व के देशों में गरीबी-भुखमरी होते हुए भी अरबों रुपयों का अन्न, दूध,घी, तेल बिना खाए ही नदी नालों में बहा देते हो?

9. क्या तुम बहरे हो जो बेवजह मरते हुए आदमी, बलात्कार होती हुयी मासूमों की आवाज नहीं सुन पाते?

10. क्या तुम अंधे हो जो रोज अपराध होते हुए नहीं देख पाते?

11. क्या तुम आतंकवादियों से मिले हुए हो जो रोज धर्म के नाम पर लाखों लोगों को मरवाते रहते हो?

12. क्या तुम आतंकवादी हो जो ये चाहते हो कि लोग तुमसे डरकर रहें?

13. क्या तुम गूंगे हो जो एक शब्द नहीं बोल पाते लेकिन करोड़ों लोग तुमसे लाखों सवाल पूछते हैं?

14. क्या तुम भ्रष्टाचारी हो जो गरीबों को कभी कुछ नहीं देते जबकि गरीब पशुवत काम करके कमाये गये पैसे का कतरा-कतरा तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर देते हैं?

15. क्या तुम मूर्ख हो कि हम जैसे नास्तिकों को पैदा किया जो तुम्हे खरी खोटी सुनाते रहते हैं और तुम्हारे अस्तित्व को ही न ?कारते हैं।

"नास्तिक" होना आसान नही कोई भी "नासमझ" इंसान "ईश्वर" के अस्तित्व को मानकर फ्री हो जाता है उसके लिए उसे "बुद्धि"की जरुरत नही होती परंतु नास्तिक होने के लिए "दृढ विश्वास और साहस" की जरूरत होती है ऐसी "योग्यता" उन लोगो के पास होती है जिनके पास "प्रखर तर्क बुद्धि" होती है "अंधश्रद्धा" ऐसा "केमिकल" है जो इंसान को "मूर्ख" बनाने मे काम आता है !

- साइबर नजर

सेव का बहुत दिलचस्प किस्सा

विष्णु नागर

यह किस्सा मेरी ससुराल देवास का है। रिटायरमेंट के बाद पति ने मकान, पेंशन सबकुछ पत्नी के नाम करवा दी।पेंशन मिलने के दो साल बाद पति ने पत्नी से सेव की सब्जी खाने की इच्छा जाहिर की। पत्नी ने कहा,जाओ खरीद लाओ। पति ने कहा कि पैसे दो। पत्नी ने कहा कि नौकरी में थे,तब तो खुद ले आते थे,अब भी ले आओ। पति ने कहा कि सब तो तुम्हें सौंप दिया,अब मेरे पास पैसे कहाँ? बात बिगड़ गई। पति महोदय इतने नाराज हुए कि घर छोड़कर चले गए।पत्नी के पास आनेवाली पेंशन भी बंद करवा दी। खुद लेने और खर्च करने लगे। पत्नी ने पति पर भरणपोषण आदि के चार मुकदमे दायर किए। 17 साल बाद न्यायाधीश के हस्तक्षेप से मामला सुलझा। उन्होंने 50 रुपये देकर बाजार से सेव मँगवाई। फिर उन महोदय की पत्नी से कहा,इन्हें इसकी सब्जी खिलाओ। खैर अब जाकर 79 साल के पति और 72 साल की पत्नी साथ रहने लगे हैं।

वैसे तो सब जानते ही होंगे सेव या सेंव क्या होती है,जिन्हें नहीं पता, उन्हें बीकानेरी भुजिया का पता तो होगा ही।बस कुछ वैसी ही मगर स्वाद में भिन्न। हम मालवियों की बहुत बड़ी कमजोरी सेव है।ऐसा मालवी आदमी-औरत-बच्चा मिलना मुश्किल है,जिसे सेव न पसंद हो मतलब बेहद पसंद न हो। समोसे के साथ सेव। खाना खा रहे हैं तो सेव। मिठाई के साथ सेव। चिवड़े के साथ सेव।मुरमुरे में प्याज काटकर उसमें मिली सेव। सेव की सूखी और गिली सब्जी भी बनती है और फटाफट बनती है। रेडी टू इट मामला है। तो सेव एक है, खाने में उसके उपयोग अनेक हैं।

हम तो खाने के वैसे ही दीवाने हैं,बशर्ते मामला शाकाहारी हो और सेव तो ऐसी चीज है साहब कि मालवा से निकले हमें अड़तालीस साल हो गए मगर हम सेव को न भूले। मालवी अब उतनी अच्छी नहीं आती मगर सेव पहले की तरह ही भाती है। पहले तो हम कितनी ही सेव खा जाते थे मगर मन साला भरता ही नहीं था। अब मन भरे न भरे,भरना पड़ता है।

मालवा छोड़कर दिल्ली आने पर जो दर्द हमें झेलने पड़े,उनमें एक दर्द दिल्ली में सेव न मिलने का भी था। जैसे ही कोई मित्र

परिचित रिश्तेदार आता था,आता है,उससे सेव जरूर मँगवाते हैं। अब तो खैर आनलाइन भी मिलने लगी है तो संकट दूर हुआ और जनाब हमारी बीवी भी अगर सेव की सब्जी बनाने से इनकार कर देती तो हम खैर 17 साल के लिए तो नहीं मगर चार घंटे के लिए जरूर रूठ जाते। वैसे यह संकट अभी तक आया नहीं।

अब सेव न जाने कितनी तरह की बनने लगी है मगर हमें तो वही ट्रेडिशनल सेव ही पसंद है। इस सेव को वैसे रतलामी सेव के नाम से ज्यादा जाना जाता है मगर सेव तो मालवा में हर जगह, कम या ज्यादा अच्छी ही मिलती है। हमने कभी एक कविता-सी लिखी थी-रतलामी सेव। पढ़िए, सिर्फ पाँच पंक्तियों की है-

भारत में रतलामी सेव न होती तो यह देश कब का रसातल में जा चुका होता
जा रहा है अभी भी
रतलामी सेव भी मगर
लोकप्रिय हो रही है।

इससे सेव के प्रति हमारा प्रेमातिरेक आप समझ सकते हैं। ओम थानवी समेत सब बीकानेरी भुजिया के दीवाने होंगे।हमने तो बीकानेर जाकर भी वहाँ की भुजिया खाई मगर स्वाद-स्वाद की बात है,हमें तो हमारी सेव ही पसंद है।
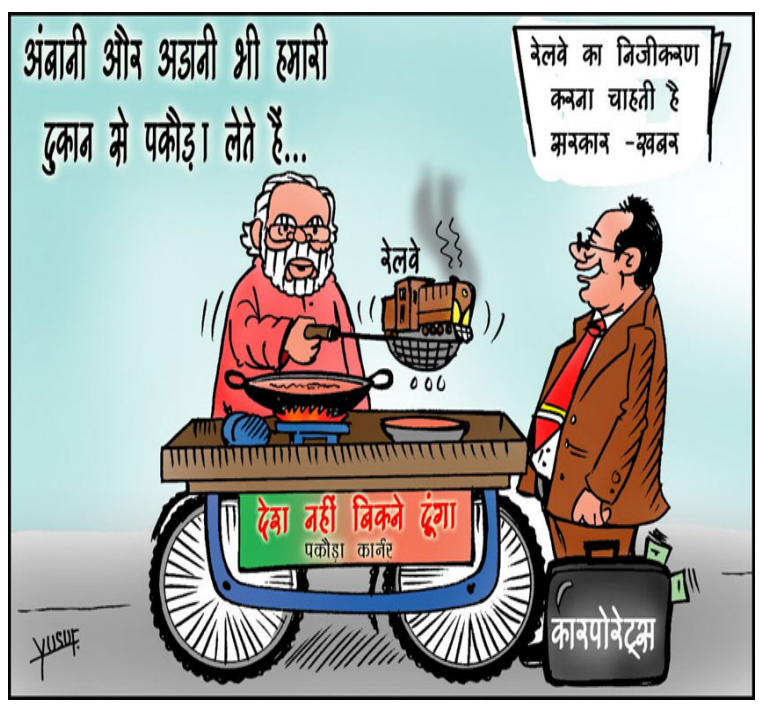
सेव जिंदाबाद।